मधुरा

तुम भी बनाओ...

एक बार मैं अपनी मित्र के घर गई। वहाँ एक पूरी दीवार उसकी बेटी का कैनवास थी। वो गर्व से सबको अपने चित्र, अपनी कलाकारी दिखाती। यह सुविधा सभी के पास हो ज़रूरी नहीं। पर फिर भी कलाकारी तो की ही जा सकती है और कई तरह से। जैसे...

कागज़, वॉटर कलर और एक पेन लेकर बैठ जाओ।

1. अपनी उँगली को रंग में डुबाओ। और बनाते जाओ चिड़िया, बच्चे, मछली...। पेन हाथ-पाँव, आँखें, मुस्कान बनाने के काम आएगा।
2. यह मेरा पसन्दीदा खेल है। कागज़ (या किसी और चीज़ पर) एक बूँद रंग डालो और कागज़ घुमा कर फूँक से उसे फैलाओ।

महेश बसेड़िया

ककोड़ा कला

एक दिन शाम को मैं भावसार जी की दुकान पर पान खाने गया था। दुकान पर मेरी नज़र अचानक एक सुन्दर-सी चिड़िया पर पड़ी – ककोड़े (एक जंगली सब्ज़ी) से बनी चिड़िया पर। भावसार जी ने इसे बड़ी तरकीब से बनाया था।

क्या तुमने कभी सब्ज़ियों से कोई कलाकृति बनाई है?